B.A. Part- I

(*History*) PAPER –I[st]

इतिहास के मुख्य स्त्रोत

(SHORT QUESTION)

प्रश्न– संहिता किसे कहते है? उनके नाम लिखिये।
उत्तर– संहित वेदो को कहते है उनके नाम है –1. ऋग्वेद, 2. यजुर्वेद, 3. सामवेद।

प्रश्न– अभिलेखों के किन्ही चार वर्ग (प्रकार) का नामोल्लेख कीजिये।
उत्तर– अभिलेखों के चार वर्ग है – 1. गुहा–लेख, 2. शिला–लेख, 3. स्तम्भ –लेख, 4. ताम्रपत्रलेख।

प्रश्न– ब्राह्मण धर्म के प्रमुख ग्रन्थों के नाम लिखिए।
उत्तर– वेद, बाह्मण, आख्यक, उपनिषद, वेदांग, सूत्रग्रन्थ, स्मृतियां, महाकाव्य तथा पुराण ब्राह्मण धर्म के प्रमुख ग्रन्थ है।

प्रश्न– वेद कितने है? इनके नाम लिखिए।
उत्तर– वेद चार है – ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अर्थवेद।

प्रश्न– उपनिषद किसे है? इनका ऐतिहासिक महत्व बताइये।
उत्तर– उपनिषद का अर्थ है – अध्यात्म विद्या अथवा ब्रह्म–विद्या। उपनिषदों में हमें आर्यों के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन के बारे में जानकारी मिलती है।

प्रश्न– वेदाग किसे कहते है? इनके नाम लिखिए।
उत्तर– वेदों को ठीक से समझने के लिए जिन ग्रन्थों की रचना की गई, उन्हें वेदांग कहते है। वेदांग छः है – 1. शिक्षा, 2. कतय, 3. व्याकरण, 4. निरूक्त, 5 छन्द एवं 6. ज्योतिष।

प्रश्न– राजतरंगिणी के रचयिता कौन थे? इनका ऐतिहासिक महत्व बताइये।
उत्तर– राजतरंगिणी के रचयिता कतहण थे इस ग्रन्थ में प्राचीन काल से लेकर 12वीं शताब्दी तक का कश्मीर का इतिहास लिखा गया है। इससे कश्मीर के अतिरिक्त भारत के अन्य भागों की घटनाओं के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है।

प्रश्न– इण्डिका के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डालिए।
उत्तर– इण्डिका नामक ग्रन्थ से चन्द्रगुप्ता मौर्य की शासन–व्यवस्था तथा तत्कालीन सामाजिक अवस्था के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

प्रश्न– प्राचीन भारत के सम्बन्ध में ऐतिहासिक जानकारी देने वाले यूनानी लेखकों के नाम लिखिए।
उत्तर– प्राचीन भारत के सम्बन्ध में ऐतिहासिक जानकारी देने वाले यूनानी लेखकों में मेगस्थनीज, डीमेकस, स्ट्रेवों, प्लिनी, एरियन, पेट्रोक्लीज आदि उल्लेखनीय है।

प्रश्न– प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख का रचयिता कौन था? उसका ऐतिहासिक महत्व बताइये।
उत्तर– प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख का रचयिता हरिषण था। इस अभिलेख से समुद्रगुप्त की विजयों और उसकी चारित्रिक विशेषताओं के बारे में जानकारी मिलती है।

(हड़प्पा सभ्यता)

प्रश्न– हड़प्पा सभ्यता की तीन प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिये।

J.D.P.G. COLLEGE

उत्तर– 1. हड़प्पा सभ्याता नगरीय तथा व्यवसाय – व्यापार प्रधान सभ्यता थी। 2. हड़प्पा सभ्यता के लोग पाषाण तथा कांसे के उपकरणों का प्रयोग करते थे एवं लोहे से अपरिचित थे। 3. हड़प्पा सभ्यता के लोगों को लिपि का ज्ञान था।

प्रश्न– मोहनजोदड़ों में खुदाई का कार्य किसके नेतृत्व में किया गया और कब किया गया।

उत्तर– 1922 ई. में श्री शखालदास बनर्जी के नेतृत्व में मोहनजोदड़ो में खुदाई का कार्य किया गया।

प्रश्न– सिन्धु–निवासी किन देवी–देवताओं की उपासना करते थे?

उत्तर– सिन्धु–निवासी शिव, माहदेवी, पशुओं, वृक्षों आदि की उपासना करते थे।

प्रश्न– सिन्धु प्रदेश में कौन–कौनसे उद्योग–धन्धे विकसित थे।

उत्तर– सिन्धु प्रदेश में अनेक उद्योग –धन्धे विकसित थे सूती तथा ऊनी कपड़े तैया करना, सोने–चांदी के आभूषण बनाना, मिट्टी के बर्तन बनाना, धातुओं से औजार हथियार बनाना, बढईगीरी का व्यवसाय आदि उद्योग–धन्धे विकसित थे।

प्रश्न– सिन्धु सभ्यता की लिपि किस प्रकार लिखी जाती थी?

उत्तर– सिन्धु सभ्यता की लिपि पहली पंक्ति में दाहिनी और से बायी ओर लिखी जाती थी तथा दूसरी पंक्ति बायी और से दाहिनी ओर लिखी जाती थी। इस प्रकार की लिखावट को बस्त्रोफेदन कहा जाता है।

(वैदिक साहित्य)

प्रश्न– उन वैदिक देवताओं के नाम लिखिये जिनका उल्लेख 1400 ई.पू. के आसपास के बोगजकोई अभिलेख में हुआ है।

उत्तर– 1400 ई.पू. के आसपास के बोगजकोई अभिलेख में निम्न वैदिक देवताओं के नाम का उल्लेख है। मित्र, वरूण, इन्द्र और मासत्य।

प्रश्न– उन दो लोकप्रिय संस्थाओं के नाम लिखिए जो वैदिक राज्य व्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखती थी।

उत्तर– 1. सभा, 2. समिति।

प्रश्न– रत्निन कौन थे?

उत्तर– उत्तर वैदिक काल में राजा के महत्वपूर्ण पदाधिकारियों को 'रत्निन' कहा जाता है।

प्रश्न– दस राजाओं का युद्ध किस–किसके बीच हुआ? इनमें किसकी विजय हुई?

उत्तर– दस राजाओं का युद्ध विश्वामित्र के नेतृत्व में पुरूवंश के आर्यो तथा भरतवंश के राजा सुदास के बीच हुआ। इस युद्ध में सुदास की विजय हुई।

प्रश्न– ऋग्वैदिकालीन चार विदुषी स्त्रियों के नाम लिखिए।

उत्तर– 1. घोष, 2. अपाला, 3. विश्ववारा, 4. लोयामुद्रा।

प्रश्न– नियोग प्रथा क्या थी?

उत्तर– नियोग प्रथा के अन्तर्गत विधवा स्त्री के पुत्र–प्राप्ति के लिए देवर अथवा किसी अन्य व्यक्ति के साथ पत्नी के रूप में रहने की स्वीकृति प्राप्त थी।

प्रश्न– उत्तरवैदिक काल में कौनसे पंच महायज्ञ प्रचलित थे।

उत्तर– 1. ब्रह्य यज्ञ, 2. देव यज्ञ, 3. पितृ यज्ञ, 4. अतिपि यज्ञ, 5. भूत यज्ञ।

प्रश्न– संस्कार किसे कहते है? चार संस्कारों के नाम लिखिए।

उत्तर– संस्कार वे सामाजिक और धार्मिक क्रियाविधियाँ होती थी। जिनसे मनुष्य के शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, चारित्रियाँ विकास का मार्ग प्रशस्त होता था। चार

J.D.P.G COLLEGE

संस्कार थे– 1. गर्भाधान, 2. पुंसवन, 3. सीमन्तोन्नयन, 4. जात कर्म।

क्षेत्रीय राज्यों की उत्पत्ति, उत्तरी भारत में नवीन धार्मिक आन्दोलनों की उत्पत्ति

प्रश्न– जैन धर्म में निर्जरा क्या है?
उत्तर– जैन धर्म में पूर्व संचित कर्मो के विनाश की प्रक्रिया को निर्जरा कहते है।

प्रश्न– जैनधर्म की मुख्य शिक्षाएं क्या है?
उत्तर– जैन धर्म की मुख्य शिक्षाएँ पांच महाव्रत है। ये है – 1. अंहिसा, 2. सत्य, 3. अस्तेय, 4. अपरिगृह, 5. ब्रह्मचर्य।

प्रश्न– सही रूप में चार आर्य सत्यों के नाम लिखिए।
उत्तर– 1. दुःख, 2. दुःख –समुदाय, 3. दुःख–निरोघ तथा 4. दुःख निरोघ का मार्ग।

प्रश्न– जैन धर्म में संवर का क्या अर्थ है?
उत्तर– जैन धर्म में संवर का अर्थ है, राम–द्वेष पर रोक लगाना। कर्मों के आगमन को प्रक्रिया को रोकन ही संवर है।

प्रश्न– बौद्ध धर्म के त्रिरत्न बताइये। अशोक के किस अभिलेख में इनका उल्लेख हुआ है?
उत्तर– बौद्ध धर्म के त्रिरत्न है 1. बुद्ध, 2. धर्म, 3. संघ। बौद्ध धर्म के त्रिरत्नों का उल्लेख अशोक के माबू अभिलेख में हुआ है।

प्रश्न– किस बौद्ध ग्रन्थ में सोलह महाजन पदों की सूची उपलब्ध है?
उत्तर– अंगुत्तर निकाय नामक बौद्ध ग्रन्थ में सोलह महाजनपदों की सूची उपलब्ध होती है।

प्रश्न– संस्थागार किसे कहते थे?
उत्तर– परिषद की बैठक संस्थागार नामक भवन में होती थी। यह लोक सभा भवन के समान था। इसमें परिषद तथा मन्त्रिपरिषद के सदस्य महत्वपूर्ण विषयों पर वाद–विवाद तथा चर्चा करते थे।

प्रश्न– केवल्य ज्ञान प्राप्त करने के बाद महावीर स्वामी क्या कहलाये?
उत्तर– केवल्य ज्ञान प्राप्त करने के बाद महावीर स्वामी जिन (विजेता) 'महावीर' तथा 'निग्रन्थ (बन्धन – रहित) कहलाये।

प्रश्न– जैन धर्म के व्यापक न होने के दो कारण लिखिए।
उत्तर– 1. जैन धर्म के नियमों का कठोर होना।
2. जैन धर्म को राजकीय संरक्षण का अभाव।

प्रश्न– किस घटना को 'धर्म चक्र प्रवर्तन' कहते है?
उत्तर– ज्ञान प्राप्त करने के बाद बुद्ध ने अपना भाषण सारनाथ में दिया। जिससे प्रभावित होकर पांच ब्रह्मण उनके शिष्य हो गये। इस घटना को धर्म चक्र प्रवर्तन कहते है।

प्रश्न– अषृांग मार्ग के नाम बताइये।
उत्तर– अषृांग मार्ग के आठ अंक है – 1. सम्यक दृष्टि, 2. सम्यक संकल्प, 3. सम्यक वाणी, 4. सम्यक कर्मान्त, 5. सम्यक आजीव, 6. सम्यक प्रयत्न, 7. सम्यक स्मृति, 8. सम्यक समाधि।

प्रश्न– बौद्ध धर्म दुराचार के केन्द्र बन गये।
उत्तर– 1. बौद्ध धर्म के अंहिसा के सिद्धान्त का ब्राह्मण धर्म पर प्रभाव पड़ा।
2. बौद्ध धर्म का भारतीय कलाओं का व्यापक प्रभाव पड़ा।

प्रश्न– जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म में दो समानताएँ बताइए।
उत्तर– 1. दोनो धर्म अनीश्वरवादी है।
2. दोनो धर्म कर्मवाद तथा पुनर्जन्म के सिद्धान्त में विश्वास करते है।

प्रश्न– बिम्बिसार के किन देशों के साथ मैत्री पूर्ण सम्बन्ध थे?
उत्तर– बिम्बिसार के वत्स, भद्र, गान्धार, कम्बोज, अवन्ति, आदि मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे।

J.D.P.G. COLLEGE

प्रश्न– कालाशोक कौन था? उसके शासन–काल की प्रमुख घटना बताइये?

उत्तर– कालाशोक शिशुनाग का पुत्र था। उसके शासन काल में दूसरी बौद्ध संगीति आयोजित की गई थी।

(आर्यो का भारत में आगमन)

प्रश्न– आर्यों के मूल स्थान के सन्दर्भ में बालगंगाधर तिलक क्या कहा है?

उत्तर– बाल गंगाधर तिलक ने अपने मत के प्रतिपादन में अपनी पुस्तक 'आर्कटिक होम इन दि वेदान' का सहारा लिया है। उन्होने आर्यों का मूल स्थान 'उत्तरी ध्रुव' बताया है। ऋग्वेद का सूक्त जिसमें दीर्घकालीन उषा की स्तुति की गई है। महाभारत में सुमेरू पर्वत का वर्णन (6 मास का दिवस और 6 मास की रात्रि बताया गया।)

प्रश्न– आर्य विदेशी न होकर भारतीय ही है। इस धारणा के समर्थक कौन थे?

उत्तर– आर्य विदेशी न होकर भारतीय ही थे इस धारणा के समर्थक अविनाश चन्द्र दास, श्री गंगानाथ दूना और डी.एस. त्रिवेदी है। इन्होने ऋग्वेद के आधार पर आर्यों को 'सप्त सैन्धव' प्रदेश का ही बताया है। उन्होने इस प्रदेश को 'ब्रहमर्षि प्रदेश' की संज्ञा दी है।

प्रश्न– स्वामी दयानन्द ने आर्यों के मूल निवास किसे बताया है?

उत्तर– स्वामी दयानन्द ने आर्यों को तिब्बत का बताया है। स्वामी दयानन्द 'सत्यार्थ प्रकाश' में बताया है।

(ऋग्वैदिक सभ्यता)

प्रश्न– ऋग्वेद में देवियों में से सर्वाधिक किसका उल्लेख हुआ है?

उत्तर– उषा का।

प्रश्न– ऋग्वेद में सहयोग देने वाली सभी विद्युषियों के नाम बताइये।

उत्तर– लोपामुद्रा, विश्वधारा।

प्रश्न– ऋग्वैदिक कालीन संस्थाओं (सभा–समिति) के स्वरूप पर प्रकाश डालिये।

उत्तर– ऋग्वैदिक कालीन सभा और समिति तत्कालीन राजनीतिक लोकतांत्रिक संस्थाएं थी जो राजा की निरकुंशता पर अंकुश लगाती थी और राजा के आयोग्य होने पर उन्हें पद्च्युत भी कर सकती थी।

प्रश्न– ऋग्वेद में किस युद्ध का वर्णन है।

उत्तर– ऋग्वेद में 'दशराज' युद्ध का वर्णन है। 'दशराज' युद्ध से तात्पर्य है 'भरत' कबीले के विरूद्ध जिसका अध्यक्ष 'सुदास'राजा था उसके विरूद्ध दस जन थे– पुरू, यदु, तुर्वश, द्रह्यु, पक्क, अनु, अलिन, भूलानस, विषाणी और शिवि। यह युद्ध पुरूष्णी (रावी) नदी के तट पर लड़ा गया। इस युद्ध में सुदामा विजयी हुयी। युद्ध कारण था कि – भरतवंश के राजा 'सुदास' ने राजपुरोहित पद पर आसीन विश्वामित्र को हटाकर वशिष्ठ को इस पद पर आसीन कर दिया।

प्रश्न– ऋग्वेद में किन सप्त नदियों का उल्लेख मिलता है?

उत्तर– ऋग्वेद में सात नदियो – 1. सिन्धु, 2. सरस्वती, 3. सतलज, 4. व्या, 5. रावी, 6. चिनाब, 7. झेलम का उल्लेख मिलता है।

प्रश्न– प्रसिद्ध गायत्री–मंत्र किस वेद का है?

उत्तर– ऋग्वेद का।

प्रश्न– कौनसा वेद 'संगीत' या गायन से संबंधित है।

उत्तर– सामवेद।

प्रश्न– अथर्ववेद की कितनी शाखाएँ है।

उत्तर– 1. शौनक 2. पिप्पलाद।

प्रश्न– 'ब्राह्मण ग्रंथ' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर– वैदिक संहिताओं की नियम निर्देश व यज्ञों के विधि–विधान को समझाने के लिये जो

व्याखाए गद्य में लिखी गयी। ये ग्रंथ ब्राह्मण ग्रन्थ कहलाते है।
प्रत्येक वेद की व्याख्या के लिये अलग–अलग ब्राह्मण ग्रंथों की रचना हुई।

प्रश्न– अर्थवेद से सम्बन्धित कौन सा ब्राह्मण ग्रंथ है?
उत्तर– 'गोपथ' ब्राह्मण अथर्ववेद से संबंधित ब्राह्मण ग्रन्थ है।

प्रश्न– 'आरण्यक' ग्रन्थ किसे कहते है?
उत्तर– आरण्यक ग्रन्थ वैदिक साहित्य के दार्शनिक ग्रन्थ है। इनका मनन एवं चिन्तन अरण्य (वनों में) हुआ। 'अरण्य' का अर्थ है – वन या जंगल।

प्रश्न– 'उपनिषद्' का क्या अर्थ है?
उत्तर– उप+निषद् दो शब्दों से मिलकर बना है। अर्थात् गुरू के समीप बैठकर रहस्मयी तत्वों का विवेचन ज्ञान प्राप्त करना (आत्मा–परमात्मा) के विषय में प्रश्नोत्तर करके समाधान करना।

(जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म)

प्रश्न– संक्षिप्त में 'त्रिरत्न' क्या थे।
प्रश्न– पंच अणुव्रत, महावव्र में अन्तर बताइये।
प्रश्न– अनेकान्तवाद से क्या तात्पर्य है।
प्रश्न– जैन धर्म का भारतीय संस्कृति में दो योगदान बताइये।

प्रश्न– जैन धर्म की दूसरी संगीति कब, क्यो और किसकी अध्यक्षता में की गई।
उत्तर– जैन धर्म की दूसरी सभा 512 ई. में, वलभी में, देवधि नामक जैन भिक्षुक की अध्यक्षा में की गई। इसका उद्देश्य जैन धर्म ग्रन्थों का स्वरूप निश्चित करना था।

प्रश्न– कुछ जैन साहित्यकारों के नाम बताइये।
उत्तर– विभलसूरि, जिनभ्रद सूरि, हेमचन्दसूरि, हरिभद्रसूरि, जिनसेन, गुणभद्र आदि।

(जनपद)

प्रश्न– सोलह जनपदों का उल्लेख किस ग्रन्थ में मिलता है।
उत्तर– सोलह महाजनपदों का उल्लेख बौद्ध ग्रन्थ 'अंगुत्तर–निकाय' में मिलता है।

प्रश्न– कुछ 'जनपदों' का उल्लेख कीजिये।
उत्तर– 1. अंग, 2. मगध, 3. काशी, 4. कौसल, 5. वत्स।

प्रश्न– 'संस्थागार' से आप क्या समझते है?
उत्तर– महाजनपदकालीन समय गणराज्यों से सम्बन्धित संसदीय भवन की व्यवस्था के समान व्यवस्था थी। 'परिषा' (लोकसभा के समान परिषा के सदस्य निर्वाचित) की बैठकों के आयोजन के लिये उस काल में 'सस्थागार' की व्यवस्था थी।

प्रश्न– 'परिषा' क्या थी?
उत्तर– गणतंत्रीय शासन–व्यवस्था में गणपति की सहायता के लिये एक परिषद (परिषा) होती थी। यह परिषद् जनपदीय व्यवस्था में सर्वोच्च प्रशासनिक संस्था होती थी। परिषद का अध्यक्ष 'गणमुख्य' कहलाता था।

प्रश्न– महानिष्क्रमण से क्या अर्थ है?
उत्तर– महात्मा बुद्ध ज्ञान की खोज में अपने कीमती वस्त्र, आभूषण एवं राजवैभव को त्यांग करके, अपना गृह त्याग करके चले गये। इसी घटना को **महानिष्क्रमण** कहते है।

प्रश्न– 'सम्बोधि' घटना क्या है?
उत्तर– गौतम बुद्ध को गया में, पीपल के वृक्ष के नीचे, समाधि लगाने के पश्चात् वैशाख मास पूर्वमासी को जो बोध (ज्ञान) प्राप्त हुआ उसे 'सम्बोधि' (बुद्धत्व) प्राप्त हुई इस घटना को सम्बोधि कहते है। इसके बाद वह 'बुद्ध' कहलाने लगे।

प्रश्न– 'महापरिनिर्वाण' क्या है?

J.D.P.G. COLLEGE

उत्तर– गौतम बुद्ध को कुशीनगर के समीप शालवृक्ष के नीचे जो निर्वाण (मोक्ष, मृत्यु) वैशाखी पूर्णिमा को प्राप्त हुआ। इस घटना को बौद्ध धर्म में 'महापरिनिर्वाण' कहते है।

प्रश्न– 'प्रतीत्यसमुत्पाद' क्या है?

उत्तर– ये बौद्ध धर्म से संबंधित दार्शनिक सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के माध्यम से (कार्य और कारण) दुःख के कारणों की व्याख्या की। यदि संसार में दुःख है तो अवश्यक उसका कारण तृष्णा है। यह बताया।

प्रश्न– बुद्धकालीन चार गणराज्यों के नाम बताइये–

उत्तर– कपिलवस्तु, कुशीनगर, वैशाली, पिप्पलीवन।

प्रश्न– संस्कृत भाषा में रचित चार बौद्ध ग्रन्थों के नाम बताइये।

उत्तर– 1. महावस्तु, 2. ललितविस्तर, 3. दिव्यावदान 4. बुद्ध रचित।

प्रश्न– महायान सम्प्रदाय अर्थ व इसके 2 सिद्धान्त बताइये।

उत्तर– 1. मूर्तिपूजा में विश्वास।
2. महायान महात्मा बुद्ध को देवरूप मानते थे।
3. महायान बोधि सत्वों में विश्वास करते हैं।

(मौर्यकाल)

प्रश्न– मौर्यकालीन इतिहास जानने के साधनों को बताइये।

उत्तर– 1. कौटिल्य का अर्थशास्त्र
2. मेगस्थिनीज की इण्डिका
3. विश्वाखदत का मुद्राराक्षस।

प्रश्न– मौर्यकालीन यूनानी लेखक कौन–कौन से थे।

उत्तर– मेगास्थिनीज, एरियन, कर्टियस, प्लूटार्क, र्जास्टेन, प्लिनी।

प्रश्न– मेगास्थिनीज कौन था?

उत्तर– मेगास्थिनजीज चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में सेल्यूकस द्वारा प्रेषित यूनानी राजदूत था। इसकी प्रसिद्ध रचना 'इंडिका' है जिससे मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त के शासन प्रबन्ध, सामाजिक स्थितियों का ज्ञान प्राप्त होता है।

प्रश्न– 'इंडिका' में मेगास्थिनीज ने कौनसी 7 जातियों का उल्लेख किया।

उत्तर– 1. दार्शनिक, 2. कृषक, 3. खाले, अर्खटक, 4. व्यापारी व श्रमिक, 5. यौद्धा, 6. निरीक्षक 7. मंत्री एवं परामर्शदता।

प्रश्न– कौटिल्य ने राज्य के सात अंग कौन से बताये है?

उत्तर– 1. राजा, 2. अमात्य, 3. जनपद्, 4. दुर्ग, 5. कोष, 6. दण्ड (सेना), 7. मित्र राज्य।

प्रश्न– मौर्यकालीन समय में उल्लिखित कुछ करो (राजस्व) को बताइये।

उत्तर– 1. भूमि कर (सीता कर), 2. बगीचों से प्राप्त होने वाली आय 'सेतु' नामक कर, 3. ब्रज कर– मवेशियों से प्राप्त आय।

प्रश्न– मौर्यकालीन 2 अदालतों के प्रकार बताइये।

उत्तर– 1. धर्मस्थीय, 2. कण्टक शोधन।
धर्मस्थानीय दीवानी अदालत थी और कण्टक शोधन फौजदारी अदालत।

प्रश्न– चन्द्रगुप्त मौर्य के समय गुप्तचरों के प्रकारा कितने थे।

उत्तर– चन्द्रगुप्त मौर्य के समय गुप्तचर दो प्रकार के थे – 1. संस्था, 2. संचार

संस्था – इस प्रकार गुप्तचर एक ही स्थान पर रहकर घटनाओं का पता लगाते थे।

संचार – इस प्रकार के गुप्तचर एक स्थान से घूमकर दूसरे स्थान पर जाकर घटनाओं का पता लगाते थे।

प्रश्न– मौर्यकाल में कितने प्रकार के दुर्ग बताये है।

उत्तर– 1. स्थल दुर्ग, 2. जल दुर्ग, 3. वन–दुर्ग, 4. गिरिदुर्ग, 5. मरूदुर्ग।

J.D.P.G. COLLEGE

(अशोक मौर्य)

प्रश्न– अशोक ने अपने शासन के कितने वर्ष में कलिंग पर आक्रमण किया।

उत्तर– अपने शासन के आठवे वर्ष में कलिंग पर आक्रमण अशोक को चअशोक से धर्माशोक में बदल लिया।

प्रश्न– अशोक के कलिंग अभियान का पर्याप्त विवरण कौन से अभिलेख में मिलता है।

उत्तर– अशोक के 13वें अभिलेख में।

प्रश्न– कलिंग प्रदेश कहाँ स्थित है। इसके राजा का नाम एवं राजधानी बताइये।

उत्तर– प्राचीन कलिंग प्रदेश, संभवतः आधनिक उड़ीसा और मद्रास के गंजाम जिले का भाग है। कलिंग का राजा खाखेल था। कलिंग की दो राजधानी थी – 1. तौसाली, 2. जौगढ़।

प्रश्न– अशोक के 8वें शिलालेख के बारे में बताइये।

उत्तर– आठवें शिलालेख से ज्ञात होता है कि कलिंग युद्ध के उपरान्त उसकी युद्ध नीति धर्म व शांतिनीति में परिवर्तित हो गई। और उसने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया।

प्रश्न– अशोक के 13वें शिलालेख पर प्रकाश डालिये।

उत्तर– अशोक ने 13वें शिलालेख में घोषणा कि – ''जीत वास्तविक शस्त्रो नहीं वरन् दया और धर्म से होती है।'' इसी अभिलेख से ज्ञात होता है कि उसने धर्म विभाग में महाभागों की नियुक्ति की।

प्रश्न– महाभागों पर प्रकाश डालिये।

उत्तर– अशोक कालीन अभिलेखों में सभी पदाधिकारियों में महामात्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण अधिकारी होता था। उसने धर्म प्रचार के लिये धर्म महाभागों की नियुक्ति की। महाभागों का उल्लेख (कलिंग, सारनाथ, कौशाजी लघु शिलालेखों में) हुआ है– अनेक प्रकार की महाभाग थे जैसे – नगर व्यावहारिक महाभाग, स्त्री अध्यक्ष महाभाग आदि। इसका प्रधान काम शासन की व्यवस्थान करना होता था।

प्रश्न– अशोक के 'धम्म' के बारे में कौन से अभिलेख बताते है।

उत्तर– अशोक के 'धम्म' के विषय में, व्याख्या के बारे में दूसरा (2वें) और (7वां) अभिलेख बताता है।

प्रश्न– अशोक ने द्वितीय शिलालेख में 'धम्म' के प्रमुख तत्व कौन से बताये।

उत्तर– 1. पापहीनता (अपासिनव), 2. बहुकथान (बहुकल्याण), 3. दया, 4. दान, 5. सच, 6. सोचय (शुद्धि)।

प्रश्न– अशोक के अभिलेख कहाँ–कहाँ प्राप्त हुये?

उत्तर– 1. कालसी, 3. गिरनार, 3. मानसेहरा, 4. गुर्जरा, 5. सहसराय।

प्रश्न– अशोक के लघु शिलालेख कहाँ प्राप्त हुये है चार बताइये।

उत्तर– 1. रूपनाथ, 2. सहसराम, 3. भ्राबू, 4. मास्की 5. ब्रह्मगिरी, 6. सिद्धपुर।

प्रश्न– मौर्यकालीन मूर्तिकला के कुछ प्रमुख केन्द्र बताइये।

उत्तर– मथुरा, सारनाथ, पटना, विदिशा, कलिंग।

प्रश्न– मौर्य काल में जल मार्ग कितने प्रकार के थे।

उत्तर– जल मार्ग 3 प्रकार के थे–

1. कुलया– नदियों द्वारा किया जाए।
2. कूलपथ– बन्दरगाह द्वारा किया जाए।
3. संयान पथ– जो जल मार्ग अति दूर से देशों को किये जात है।

प्रश्न– चन्द्रगुप द्वितीय (विक्रमादित्य) के दरबार के प्रमुख विद्धानों के नाम बताइये।

उत्तर– नौ विद्वानों की मण्डली –1. कालीदास, 2. धन्वतरि, 3. क्षपणक, 4. अमरसिंह, 5. वेताल

J.D.P.G.COLLEGE

भट्ट, 6. शंकु, 7. घटकर्पर, 8. वराहमिहिर, 9 वरूचि।

प्रश्न– गुप्त काल में श्रेणी से आप क्या समझते है। दो प्रमुख श्रेणियों के नाम बताइये।

उत्तर– 'श्रेणी' एक ही प्रकार के व्यवसाय करने वालों का संगठन होता था। दो प्रमुख श्रेणी थी– 1. मन्दसौर पटवाय (बुनकर श्रेणी), 2. इन्दौर की तैलिक श्रेणी।

प्रश्न– मन्दसौर प्रशस्ति का रचयिता कौन था?

उत्तर– वत्सभट्टि

प्रश्न– गुप्तकालीन प्रशस्तिकारों का नामोल्लेख कीजिये।

उत्तर– हरिषेण, वीरसेन, वत्सभट्टि, वसुबन्धु।

प्रश्न– विशाखदत्त की रचनाओं का नामोल्लेख कीजिये।

उत्तर– मुद्राराक्षस, देवीचन्द्रगुप्तम

प्रश्न– वासदत्ता का रचयिता कौन है?

उत्तर– सुबन्धु।

प्रश्न– शूद्रक की प्रसिद्ध रचना कौन–सी है।

उत्तर– मृच्छकटिक।

प्रश्न– वात्स्यायन का प्रसिद्ध ग्रन्थ कौन सा है?

उत्तर– कामसूत्र।

प्रश्न– अमरकोश का रचचिता कौन है।

उत्तर– अमरसिंह।

प्रश्न– भारिव ने कौन सा काव्य की रचना की।

उत्तर– किरातार्जुनीयम।

प्रश्न– पंचतंत्र की रचना किसने की।

उत्तर– विष्णु शर्मा ने।

प्रश्न– वसुबन्धु ने किस ग्रंथ की रचना की।

उत्तर– अभिधर्म कोश की।

प्रश्न– गुप्तकाल में नीति ग्रन्थ कौन–सा लिखा गया।

उत्तर– 'कामान्दक' ने नीतिसागर (लिखा)।

प्रश्न– चन्द्र व्याकरण के रचयिता कौन थे?

उत्तर– चन्द्रगोमिन।

प्रश्न– 'मनुस्मृति' कब लिखी गयी।

उत्तर– गुप्त काल में।

प्रश्न– जैन आचार्य सिहसेन ने कौन सा ग्रन्थ लिखा।

उत्तर– न्यायावतार।

प्रश्न– जैन विद्वानों के नाम बताइये।

उत्तर– वसुबन्धु, असंग, सिद्धसेन, आर्यदेव (योगाचार ग्रन्थ), जिनचन्द्र, देवीनन्दन।

प्रश्न– गुप्ता काल का प्रसिद्ध गणितज्ञ कौन था।

उत्तर– 'आर्यभट्ट' प्रसिद्ध गणिताचार्य था जिसने 'आर्य भट्टीयम' ग्रन्थ लिखा और 'पृथ्वी गोल है तथा वह अपनी परिधि पर घूमती है इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।''

प्रश्न– गुप्त काल के प्रसिद्ध वैज्ञानिक एवं ज्योतिषाचार्य कौन थे?

उत्तर– 'वराहमिहिर' गुप्तकाल का प्रख्यात ज्योतिषाचार्य थे। उन्होने विभिन्न नक्षत्रों व ग्रहों का अध्ययन किया। वृहज्जातक, पंचसिद्धान्तिका एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थ वृहत्तसंहिता की रचना की।

प्रश्न– 'नागार्जुन' पर संक्षिप्त में बताइये।

उत्तर– नागार्जुन गुप्तकाल के प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे जिन्होने 'रस–चिकित्सा' नामक नवीन चिकित्सा पद्धति का आविष्कार किया। 'पारस' का आविष्कार भी नागार्जुन ने ही किया था। नागार्जुन ने सिद्ध किया रोगोपचार में स्वर्ण, चांदी, लोहा, तांबा आदि खनिज धातुओं का भी प्रयोग किया जाता है।

J.D.P.G. COLLEGE

प्रश्न– प्रसिद्ध वैध गुप्तकाल के कौन से थे।
उत्तर– 'धन्वन्तरि।

प्रश्न– 'अष्टांग हृदय' की रचना किसने की।
उत्तर– वागभट्ट ने।

प्रश्न– पशु–चिकित्सा के क्षेत्र में कौन–कौन से महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे गये?
उत्तर– हस्ति–आयुर्वेद, अश्व–आयुर्वेद

प्रश्न– प्रसिद्ध वैज्ञानिक कौन से थे (गुप्तकाल में)
उत्तर– नागार्जुन, वराहामिहिर

प्रश्न– गुप्तकालीन चित्रकला के उदाहरण बताइये।
उत्तर– अजन्ता, एलोरा एवं बाघ की गुफाओं में गुप्तकालीन चित्रकला के अनुपम उदाहरण देख सकते हैं। बाघ की गुफाएँ भित्तिचित्र मानव के लौकिक जीवन पर आश्रित है। अजन्ता की गुफाएं जातक कथाओं से चित्रित है।

प्रश्न– गुप्तकालीन कला की विशेषताएं बातइये।
उत्तर– 1. जीवन का यर्थाथ चित्रण, 2. प्राकृतिक सौन्दर्य, 3. सजीवता, 4. पूर्णतः भारतीय, 5. सजीवता, भाव भंगिमा मुद्रा से युक्त, 6. आध्यात्मिकता और अलौलिकता।

प्रश्न– गुप्तकालीन शासन प्रबन्ध के कुछ प्रमुख पदाधिकारियों का नामोल्लेख कीजिये।
उत्तर– महाबलाधिकृत (सेनापति), महादण्डनायक (न्यायाधीश), महा संधि विग्रहिक (परराष्ट्रमंत्री), दण्डउपाशिक (पुलिस विभागाध्यक्ष), अक्षपटलाधिकृत (राजकीय कागज–पत्र का मंत्री) आदि।

प्रश्न– गुप्तकालीन प्रशासन की मुख्य चार विशेषताएं बताइये।
उत्तर– 1. एक तन्त्रीय शासन पद्धति थी शासन को सारी शक्तियां राजा के हाथ केन्द्रीत होती थी।
2. सहायता के लिय मंत्रिपरिषद होती थी। केन्द्रिय शासन कई विभागों में संगठित था। जिन्हें 'अधिकरण' कहा जाता था।
3. कई प्रान्तों में विभक्त था जिसे (प्रान्त) 'भुक्ति' कहा जाता था। प्रान्त या भुक्ति के सर्वोच्च अधिकारी को (राज्यपाल) को 'उपरिक' या 'गोप्ता' नाम से जानते थे।
4. सम्राट के बाद दूसरा स्थान युवराज का होता था।

प्रश्न– वन या जगल के अधिकारी को गुप्तकाल में क्या कहा जाता था।
उत्तर– जंगल के अधिकारी को 'गौल्मिक' कहा जाता था।

प्रश्न– गुप्तकालीन कुछ करो के नाम बताइये।
उत्तर– 1. उपरिकर – यह एक प्रकार का अतिरिक्त कर होता था।
2. भोगकर – पैदावार का छठा भाग
3. बली– यह कर जनता द्वारा राजा को अपनी इच्छा से दिया जाता था।
4. समन्ती कर– यह कर सामन्तों द्वारा दिया जाता था।
5. हिरण्यकर – यह कर अनाज के रूप में कुछ फसलों पर लिया जाता था।

प्रश्न– ग्राम पंचायत का अध्यक्ष कौन कहलाता था?
उत्तर– 'ग्रामपति' या 'महत्तर'

प्रश्न– ग्राम के अधिवेशनों की अध्यक्षता कौन करता था?
उत्तर– ग्रामणी

प्रश्न– हर्षकालीन कुछ साहित्यिक स्त्रोंतो का नाम लिखिये।
उत्तर– हर्षचरित, कादम्बरी

प्रश्न– वर्धन वंश की स्थापना किसने की?
उत्तर– इस वंश की स्थापना थानेश्वर में 'पुष्यभूति' ने की थी। हर्ष वर्धन भी इसी वर्धन या

J.D.P.G. COLLEGE

पुष्यभूति वंश का राजा था। हर्ष इस वंश का छठा राजा था।

प्रश्न– हर्ष को 'सकलोत्तरापथनाथ' कहा जाता है? क्यो।

उत्तर– हर्ष को 'सकलोत्तरापथनाथ' कहा है क्योंकि हर्ष ने अपनी दिग्विजय से मगध, उड़ीसा, गौड (पूर्वी बंगाल), मालवा, गुजरात, सौराष्ट्र, सिन्ध प्रदेशों का जीतकर अपने वर्धन साम्राज्य में मिला लिया था। उसे भारत का अन्तिम हिन्दू सम्राट कहा जाता है। 'सकलोत्तरापथनाथ' से अभिप्राय है कि उसने अधिकांश उत्तर प्रदेश को अपने अधिकार कर लिया था। उसने पाँचों भारत पर 'पंचभारत' पर अधिकार कर लिया था।

प्रश्न– हर्षकालीन कवियों और साहित्यकारों के नाम बताइये।

उत्तर– बाणभट्ट, मयूर, भूषणभट्ट (बाणभट्ट का पुत्र), मातंग दिवाकर, प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान जयसेन।

प्रश्न– हर्ष द्वारा रचित ग्रंथों के नाम बताइये।

उत्तर– रत्नावली, प्रियदार्शिका, नागानन्द।

प्रश्न– हर्ष के समकालीन दक्षिण में कौन–सी राज्य शक्तियां थी।

उत्तर– 1. चालुक्य नरेश पुलेकेशिन द्वितीय
2. पल्लव शासक महेन्द्रवर्मन प्रथम
4. वल्लभी नरेश, ध्रुवसेन द्वितीय
5.

प्रश्न– राज्यवर्धन द्वितीय के सन्दर्भ में लिखिये।

उत्तर– राज्यवर्धन द्वितीय हर्षवर्धन का ज्येष्ठ भ्राता तथा प्रभाकर वर्धन का ज्येष्ठ पुत्र था। प्रभाकर वर्धन की मृत्यु पर राजा बना था परन्तु बंगाल के राजा शशांक ने उसका वध कर दिया था। इस कारण हर्षवर्धन को थानेश्वर का राजा बनना था।

प्रश्न– 'सकलोत्तरपथ–नाथ' तथा 'सकलोत्तरापकेश्वर' की उपाधि से किसे विभूषित किया गया।

उत्तर– समस्त उत्तरी भारत का अधिकार करने के कारण 'हर्षचरित' में हर्षवर्धन को 'सकलोत्तरपथनाथ' कहा गया है। पुलकेशिन द्वितीय के समय के ऐहोल अभिलेख में हर्ष को 'सकलोत्तरापथेश्वर' कहा गया है।

(चालुक्य वंश)

प्रश्न– चालुक्य वंश के संस्थापक पुलकेशीन प्रथम के बारे में बातइये।

उत्तर– वातापी वंश की स्थापना का श्रेय पुलकेशीन प्रथम को जाता है उसने वातापी किले का निर्माण करवाया। इस वंश का प्रतापी–वीर यौद्धा एवं अनेक प्रकार के यज्ञों को करने वाला था।

प्रश्न– वेंत्री के चालुक्यों पर प्रकाश डालिये।

उत्तर– वेंत्री के चालुक्यों या पूर्वी चालुक्यों ने दक्षिणी भारत की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विष्णुवर्धन ने अपने नवीन राज्य की राजधानी वेंत्री को बनाया। विष्णुवर्धन इस वेंशी चालुक्यों का संस्थापक माना जाता है।

प्रश्न– चालुक्यकालीन प्रमुख देवालयों पर प्रकाश डालियें।

उत्तर– चालुक्य काल के 70 देवालय ऐहोल में प्राप्त हुये है तथा पट्टकल से प्राप्त विरूपाक्ष व पापनाथ के चालुक्यकालीन मंदिर अति श्रेष्ठ है। बादामी से भी अनेक चालुक्य देवालय प्राप्त हुये है।

प्रश्न– अलवार व नायवार कौन थे? इनके प्रमुख संघ बताइये।

उत्तर– पल्लकाल में (दक्षिण भारत में) अलवार वैष्णव धर्म को मानने वाले संत थे और नायनार –शैव (शिव) धर्म से संबंधित संत थे। इन्होने मधुर तथा प्रभावशाली ढंग से

J.D.P.G. COLLEGE

उपदेशों, भक्ति–रस द्वारा दक्षिण भारत में भक्ति की लहर पैदा की।

इस भति आंदोलन के कारण दक्षिण भारत में मूर्तिपूजा, अवतारवाद, याज्ञिक कर्मकाण्डों का प्रचार बढा। पल्लव तथा चोल काल में शैव धर्म का प्रचार नायनारों ने किया।

(पल्लव वंश)

प्रश्न– पल्लवंश के इतिहास जानने के साधन बाताइये।

उत्तर– पल्लवंश के इतिहास जानने के साहित्यिक साधन निम्न है –

1. संस्कृत तथा तमिल भाषा में लिखे गये ग्रन्थ–महेन्द्रवर्मन द्वारा लिखित 'मत्तविलासप्रहसन'।
2. शेक्किल्लार द्वारा लिखित – पेरियपुराण।
3. दण्डी द्वारा लिखी गयी – 'अवन्ती–सुन्दरी–कथासार' यह मुख्य रूप से सिहविष्णु के काल की राज. एवं सास्कृतिक जानकारी देते है।
4. तमिल ग्रंथ – नन्दिक्कलम्बकम्– इसमें नन्दिवर्मन की उपाधियों का उल्लेख है।

प्रश्न– पल्लव वंश पर प्रकाश डालिये।

उत्तर– पल्लव राज्य भी द्रविड राज्यों का ही एक राज्य था, जो कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के दक्षिण में था पल्लव राज्य में 500 वर्षों तक शासन किया। इनके काल की राजधानी काँची थी जो विधाध्यन का प्रमुख केन्द्र था।

प्रश्न– कुछ पल्लव नरेशों के नाम बताइये।

उत्तर– 1. स्कन्दवर्म, 2. सिहविष्णु, 3. महेन्द्रवर्मन प्रथम, 4. नरसिंह वर्मन, 5. नन्दिवर्मन I और II, III, दन्तिवर्मन आदि।

प्रश्न– 'संगम' शब्द का शब्दिक अर्थ क्या है? संगठन से क्या तात्पर्य है।

उत्तर– संगम का शब्दिक अर्थ है संघ, परिषद, अकादमी अथवा विद्यालयों, अथवा कवियों का संघ या अकादमी।

दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते है कि तमिल कवियों, तथा विचारकों का एक संगठन था। संगम सहित्य की रचना कृष्णा एवं तुंगभद्रा के दक्षिण भूभ्भाग में स्थित प्राचीन 'तमिलकम्' प्रदेश में हुआ करती थी। इसके लिये विद्वानों की परिषदें व गोष्ठियां आयोजित की जाती थी। इनका आयोजन पाण्ड्य नरेश किया करते थे।

प्रश्न– संगम साहित्य के आयोजन कब–कब, कहाँ–कहाँ अयोजित किये गये।

उत्तर– संगम साहित्य का प्रथम गठन पाण्ड्यों के संरक्षण में उनकी राजधानी मदुरा में हुआ। इसके अध्यक्ष अगस्त्य ऋषि थे। इस प्रस संगम साहित्य का विभिन्न संग्रह ग्रन्थों में निहित है।

द्वितीय संगम – दूसरा संगम पाण्डया नरेशों के संरक्षण में ही कपाटपुरम में हुआ जिनके अध्यक्ष तोलकप्पियर थे। इस संगम काल में अनेक ग्रन्थों की रचना हुई जिसमें प्रसिद्ध रचना (ग्रंथ) 'तोल्काप्रियम' है जिसकी रचना तोल्कपियम है जिसकी रचना तोल्कापियर द्वारा की गई।

तृतीय संगम – तीसरा संगम मदुरा का उत्तरी भाग में आयोजित हुआ। इसका आयोजन करने वाला पाण्ड्य नरेश है। इस संगम की अध्यक्षता नक्कीरर ने की।

इस प्रकार पाण्ड्य नरेशों के संरक्षण में तीन साहित्यिक संगम आयोजित हुये।

प्रश्न– संगम साहित्य के अन्तर्गत महाकाव्यों के नाम बताइये।

उत्तर– संगम साहित्य के दो महाकाव्य है –

1. शिल्पदिक्कारम् 2. मणिमेकलै।

1. शिलपदिक्कारम् की रचना इलांगो आदिकल ने की थी जो तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और विदेशी व्यापार पर प्रकाश डालता है।
2. मणिमैकले – की रचना सीत्तलै सत्तनार ने की। यह तत्कालीन सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डालता है।

J.D.P.G. COLLEGE

प्रश्न– संगम साहित्य के उल्लेखनीय ग्रन्थों के नाम बताइये।

उत्तर– 1. तोल्कापियम – यह तमिल व्याकरण पर लिखा हुआ विस्तृत ग्रंथ है। यह ग्रंथ 3 खण्डों में विभाजित है इसकी रचना अगस्त्स्य ऋषि के शिष्य तोल्कापियर ने की थीं। व्याकरण के अलावा इसमें धर्म, धर्म, काम, मोक्ष संबंधी बातें भी दी गई।

2. इसके अतिरिक्त अन्य आठ ग्रन्थ है –जिनमें नाम है – परिपादह, अहनानुद, नरिणाई आदि। इससे तमिल प्रदेश की भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक जानकारी प्राप्त होती है।

3. पत्तुपात्तु अथवा दस गीतों में सांस्कृतिक एवं राजनीतिक जानकारी प्राप्त होती है।

4. महाकाव्यों में दो महाकाव्य है – 1. शिल्पदिक्कारम, 2. मणिमेकलै।

प्राचीन भारत का इतिहास

प्रश्न– प्राचीन भारत का इतिहास मे मुख्य स्त्रोत :–

उत्तर– 1. पुरातात्विक स्त्रोत

2. साहित्यिक स्त्रोत

3. विदेशी यात्रियों और लेखकों के विवरण

1. पुरातात्विक स्त्रोत :–

(i) अभिलेख (ii) मुद्राएं एवं सिक्के

(iii) मुंहरे (iv) कलाकृतियां

(v) स्मारक एवं भग्नावेश (भवन, मंदिर, स्तूप, स्तम्भ आदि)

(vi) अन्य पुरावशेष (मृदभाण्ड, उपकरण, आभूषण)

2. साहित्यिक स्त्रोत :–

(i) धार्मिक साहित्य

(अ) ब्राह्मण धर्म ग्रंथ

(a) वेद (b) ब्राह्मण

(c) आरण्यक (d) उपनिषद

(e) वेदांग (f) सूत्र–ग्रंथ

(g) स्मृति साहित्य (h) महाकाव्य

(i) पुराण

(ब) बौद्ध धर्म ग्रन्थ :–

(a) त्रिपिटक (b) जातक ग्रन्थ

(c) दीपवंश और महावंश (d) मिलिन्दपन्हो

(e) संस्कृत बौद्ध ग्रन्थ

(स) जैन धर्म ग्रन्थ –

(ii) धर्मेत्तर साहित्य –

(अ) लौकिक एवं अर्ध–ऐतिहासिक साहित्य–

(a) पाणिनी की अष्टाध्यायी

(b) कौटिल्य का अर्थशास्त्र

(c) कात्यायन का वार्तिक

(d) पंतजली का महाभाष्य

(e) गार्गी संहिता

(f) कामान्दक का नीतिसार

(ब) ऐतिहासिक साहित्यक –कल्हण की 'राजतरंगिणी' एवं बाणभट्ट का 'हर्षचरित' प्रमुख ऐतिहासिक ग्रन्थ है।

(स) क्षेत्रीय भाषाओं का साहित्य–

3. **विदेशी यात्रियों और लेखकों के विवरण**

(अ) यूनानी लेखक

मेगस्थनीज की ''इण्डिका''।

(ब) चीनी लेखक –

(a) फाह्यान

(b) व्हेनसांग

(c) इत्सिंग

प्रश्न– मगध पर ध्यर्क वंश से लेकर नंद वंश तक शासन निम्नलिखित है –

उत्तर–(i) **ध्यर्क वंश –**

बिम्बिसार– मगध पर ध्यर्क के शासक बिंबिसार के द्वारा सर्वप्रथम शासन किया गया था। बिंबिसार के द्वारा मात्र चम्पा राज्य को अपने साम्राज्य में मिलाया गया था।

अजातशत्रु – बिंबिसार के पुत्र अजातशत्रु के द्वारा अपने पिता की हत्या की इसलिए अजातशत्रु को ''पितृ ध्ंता'' कहा जाता है।

उदायिन– अजातशत्रु के पुत्र उदायिन के द्वारा सर्वप्रथ पाटलीपुत्र की स्थापना की।

नागदासक – ध्यर्क वंश का अंतिम शासक।

(ii) शिशुनागवंश –

J.D.P.G. COLLEGE

शिशुनागवंश की स्थापना शिशुनाग के द्वारा की गई थी।

कालाशोक – शिशुनाग की मृत्यु के पश्चात् कालाशोक मगध का सम्राट बना।

(iii) नन्द वंश – नन्द वंश की स्थापना महापद्य – उग्रसेन ने की थी।
धनानन्द – अंतिम नंद वंश का शासक।

प्रश्न– महावीर स्वामी की जीवनी

उत्तर– जन्म धर्म के चौबीसवें तथा अंतिम तीर्थकर महावीर स्वामी का जन्म वैशाली के समीप कुण्डलग्राम में ज्ञातृक क्षत्रिय कुल में 599 ई. पू. (कुछ के अनुसार 540 ई.पू.) में हुआ था उनके पिता का नाम सिद्धार्थ था जो कुण्डलग्राम के सरदार थे। महावीर माता का नाम त्रिशला था। महावीर स्वामी का बचपन का नाम वर्धमान था। महावीर का विवाह यशोदा नामक राजकन्या से हुआ था महावीर स्वामी की मृत्यु 527 ई.पू. (कुछ के अनुसार 467 ई.पू.) में हुई थी। महावीर स्वामी ने ब्रह्मचर्य नामक एक व्रत जोड़कर पंच महाव्रत पर जोर दिया।

जैन धर्म के आधारभूत सिद्धान्त एवं शिक्षायें–

(i) निवृत्ति मार्ग
(ii) अनीश्वरवाद
(iii) आत्मवाद में विश्वास
(iv) कर्म की प्रधानता
(v) पुर्नजन्म
(vi) मोक्ष तथा निर्वाण प्राप्त करना
(vii) पंच महाव्रत (सत्य, अंहिसा, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य)
(viii) तपस्या और उपवास
(ix) स्याद्वाद
(x) वेदों में अविश्वास
(xi) स्याद्वाद
(xii) नारी स्वातन्त्र्य
(xiii) जाति भेद में अविश्वास

प्रश्न– मौर्य प्रशासन की विशेषताएं

उत्तर– मौर्य प्रशासन की विशेषताएं निम्नलिखि है –

(i) केन्द्रीय प्रशासन
(ii) राजा
(iii) मन्त्रिपरिषद्
(iv) मंत्रिण
(v) अन्य पदाधिकारी – कौटिल्य के अर्थशास्त्र में अठारह मंत्रियों का उल्लेख किया है।
(vi) प्रांतीय शासन – पांच प्रांतीय शासन (तक्षशिला, पाटलीपुत्र, उज्जयनी, कालीगर, स्वर्णगिरी
(vii) नगरों का प्रबंध (6 समितियां बनायी गयी थी)
(viii) न्याय व्यवस्था।
  (क) धर्मस्थीज अथवा दीवानी
  (ख) कष्टकशोधन अथवा फौजदारी
(ix) गुप्तचर व्यवस्था
  (क) संस्था
  (ख) संचारा
(x) सैनिक शासन

प्रश्न– सातवाहन .....?

उत्तर– सातवाहन वंश का संस्थापक 'सिमुक' था। पुराणों में सातवाहनों का आन्ध्र जातीय कहां है। डॉ. डी. आर. भण्डारकर तथा डॉ. के गोपालाचारी के अनुसार सातवाहन क्षत्रिय थे।

(i) सातवाहनों का मूल स्थान
(ii) सातवाहनों का उदय
(iii) सातवाहन शासक

गौतमीपुत्र शतकर्णी–

(a) शक विजय, अन्य विचरो
(b) साम्राज्य विस्तार
(c) पराजय
(d) मृत्यु
(e) व्यक्तित्व
(f) सहशासन (सम्मिलित राज्य)

प्रश्न– समुद्रगुप्त की नीति .....?

उत्तर–

(i) समुद्रगुप्त की नीति

(ii) दिग्विजय योजना

(अ) आर्यावर्त पर प्रथम आक्रमण

(ब) दक्षिण भारत पर आक्रमण

(स) आर्याविर्त पर द्वितीय आक्रमण

(iii) आटविक नरेशों पर विजय

(iv) सीमान्त राजाओं पर विजय

(v) सीमान्त नृपतियों का आत्मसमर्पण

(vi) प्रत्यर्पण की नीति

(vii) अश्वमेघ यज्ञ

(viii) समुद्रगुप्त का चरित्र।

प्रश्न– गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग.....?

उत्तर– गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग काह जाता है। इसे 'क्लासिक युग' की संज्ञा दी गई है।

(i) ऐतिहासिक महत्व

(ii) हिन्दू धर्म का पुनरूत्थान

(iii) साहित्य की उन्नति

(iv) ललित कलाओं की उन्नति

(v) राजनैतिक एकता

(vi) राष्ट्रीयता का उदय

(vii) वृहत्तर भारत

(viii) राष्ट्रीयता का उदय

(ix) वृहत्त भारत

(x) बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म

(xi) कृषि एवं राजस्व व्यवस्था

(xii) व्यापार

(xiii) स्थापत्य एवं मूर्तिकला

प्रश्न– राजपूतों की उत्पत्ति.....?

उत्तर– (i) राजपूतों की उत्पत्ति

(a) वैदिक क्षत्रियों की सन्तान

(b) अग्निकुण्ड से उत्पन्न

(c) ब्राह्मणों से उत्पत्ति

(d) सूर्य एवं चन्द्रवंशी

(e) विदेशियों की संतान

(ii) राजपूत राजवंश

(a) प्रतिहार वंश

(b) मिहिरभोज

(c) महेन्द्रपाल–I

(d) महिपाल

(e) गहडवाल वंश

(f) जयचन्द

(g) चौहान वंश

(h) चंदेल वंश

(i) परमार वंश

(iii) राजपूत युगीन समाज एवं संस्कृति।

(iv) राजपूत कालीन कला

(a) वास्तुकला – द्रविड शैली, नागर शौली

(b) मूर्तिकला

(c) चित्रकला

J.D.P.G. COLLEGE